Lecture NO- 21

सिंचु सभ्यता

BY

Dr. Komal (Guest Professor)
SNSRKS College
History

Scanned with CamScanner

①

सिन्धु घाटी की सभ्यता

सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता है। जो मुख्य रूप से दक्षिण एशिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में, जो आज तक उत्तर पूर्व अफगानिस्तान, पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम और उत्तर भारत में फैली है।

- सिन्धु घाटी की सभ्यता का उद्भव काल में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में हुआ था, जो वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में अवस्थित है। इस काल की सभी संस्कृतियों में सैन्धव सभ्यता सबसे विकसित, विस्तृत और उन्नत अवस्था में थी।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहते है क्यों

Scanned with CamScanner

(2)

कि सर्वप्रथम 1921 ई० में हड़प्पा नामक स्थान से ही इस संस्कृति के ~~सम्बन्ध~~ सम्बन्ध में जानकारी मिली थी।

- सैन्धव सभ्यता अनुकूलता के मध्य उत्पन्न हुई थी, जिसका ज्ञान उत्खनन एवं अनुसन्धान द्वारा होता है। सैन्धव सभ्यता एक नगरीय सभ्यता सभ्यता थी, क्यों कि इसके पुरातात्विक अवशेषों से परिवहन, व्यापार, तकनीकी, उत्पादन एवं नियोजित नगर व्यवस्था के तत्व प्राप्त होते हैं।
- सिन्धु घाटी सभ्यता में कला व शिल्प काफी विकसित था, कुछ स्थानों से उत्तम कलाकृतियों की प्राप्त हुई है। सिन्धु घाटी सभ्यता में बर्तन का निर्माण,

Scanned with CamScanner

मूर्तियों का निर्माण व मुद्रा का निर्माण इत्यादि प्रमुख शिल्प थे। सिन्धु घाटी सभ्यता में कांस्य कलाकृतियाँ, मृणमूर्तियाँ, मनके की वस्तुएं व मुहरें प्राप्त हुई हैं।

- सिन्धु सभ्यता संबंधी प्रदेशों के उत्खनन से यह तथ्य भी प्रकाश में आया है कि साधारण मकानों के अतिरिक्त यहाँ पर राजकीय एवं सार्वजनिक भवन भी थे।

- हड़प्पा सभ्यता का स्वरूप विकसित एवं व्यवस्थित था। नगर नियोजन सार्वजनिक समिति के हाथों में रहा होगा अन्यथा नगर विन्यास इतना सुन्दर सम्भव नहीं था।
- सिंधु सभ्यता महाभारत काल में

(4)

मौजूद थी। महाभारत मे इस प्रकार से सिन्धु देश कहते थे। इस सिन्धु देश का राजा जयद्रथ था। जयद्रथ का विवाह धृतराष्ट्र की पुत्री दुःश्शाला के साथ हुआ था। महाभारत के युद्ध मे जयद्रथ ने कौरवों का साथ दिया था और चक्रव्यूह के दौरान अभिमन्यू की मौत मे उसकी बड़ी भूमिका थी।

• सिन्धु घाटी सभ्यता का पतन:-

सैन्धव सभ्यता अपने काल की विकसित नगरीय सभ्यता थी जो बहुत बड़े भू-भाग मे फैली हुई थी। सामान्यत: किसी भी सभ्यता का पतन एक नहीं अपितु अनेक तथ्यों का परिणाम होता है।

सिंधु सभ्यता के नगर-नियोजन एवं नगर निर्माण में एक ह्रासोन्मुख प्रवृत्ति दिखती है। उदाहरण के लिये पतली विभाजक दीवारों से घरों के आंगन का विभाजन कर दिया गया था। शहर बड़ी तेजी से तंग बस्तियों में बदल रहे थे। मुहरों, लघु मूर्तियों, मनकाओं आदि की संख्या में कमी आई। बहावलपुर क्षेत्र में हाकरा नदी तटों के साथ परिपक्व काल में जहाँ 174 बस्तियाँ थीं, वहाँ उत्तरवर्ती हड़प्पा काल में बस्तियों की संख्या 50 रह गई। सिंधु सभ्यता के नगरों का पतन स्थूल रूप से लगभग 1800 ई० पू० में हुआ। इस तारीख का समर्थन इस तथ्य से भी होता है कि मेसोपोटामिया साहित्य में 1900 ई० पू० के अंत तक मेलुहा का उल्लेख समाप्त हो गया था

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष :-

सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन के लिये उपर्युक्त वर्णित कारणों के विश्लेषण से यह स्पष्ट नहीं पाता कि इनमें से कौन कारण सर्वाधिक या आंशिक रूप से सत्य है या असत्य। विभिन्न कारणों को जोड़कर अगर एक खंड बनाने की कोशिश की जाय तो इतना अवश्य कहा जा सकता है कि सिन्धु प्रदेशों में आई प्राकृतिक विपदाओं एवं उसके फलस्वरूप उत्पन्न आर्थिक संकट ने इस सभ्यता के विनाश में सर्वाधिक एवं सक्रिय योग प्रदान किया।

//

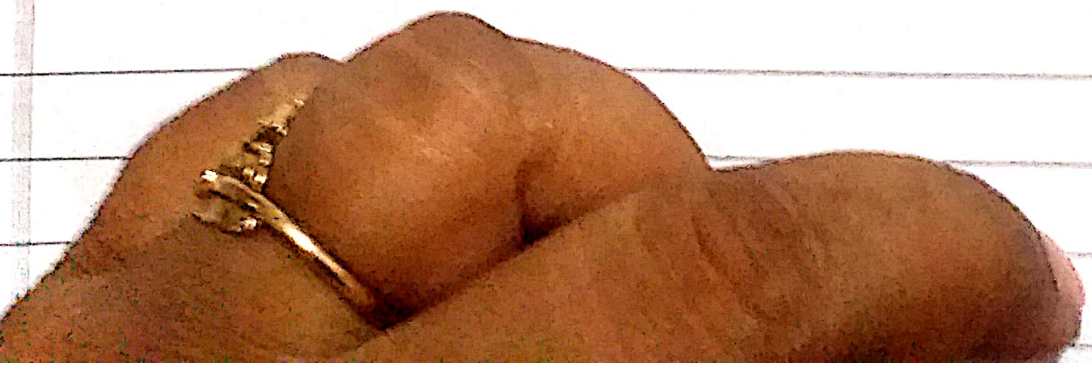

Scanned with CamScanner